International Journal of History 2024; 6(2): 270-272

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2024; 6(2): 270-272
Received: 18-09-2024
Accepted: 21-11-2024

प्रमोद कुमार सैनी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

दिग्विजय भट्नागर
प्रोफेसर, शोध निर्देशिका, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
प्रमोद कुमार सैनी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

शेखावाटी में जल संचय के परम्परागत स्त्रोतः बावड़ियों के विशेष सन्दर्भ में

प्रमोद कुमार सैनी, दिग्विजय भट्नागर

सारांश
राजस्थान में शेखावाटी क्षेत्र महत्त्वपूर्ण भू–भाग के रूप में जाना जाता है यह क्षेत्र अपने गौरवशाली और समृद्धशाली सांस्कृतिक अतीत के लिए विख्यात रहा है यह क्षेत्र प्रदेश में वीर–वीरागनाओं की भूमि है यहाँ समय–समय पर अनेक वंशों के योग्य व पराक्रमी शासक अवतरित हुए जिन्होंने स्थापत्य मुख्यत (बावड़ियों, तालाब, गढ़, हवेलियों, छतरियाँ) के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। जल संरक्षण की दिशा में रियासतकालीन शासकों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। शेखावत काल में बावड़ियों के निर्माण का उद्देश्य मुख्य रूप से आने वाले काफिलों के लिए पानी की व्यवस्था करना था। इन बावड़ियों का निर्माण यहाँ के शासकों ने परोपकार व जनकल्याण की भावना से अभिभूत होकर करवाया वर्तमान समय में न केवल राजस्थान अपितु वैश्विक जल संकट की विकट स्थिति में इन बावड़ियों रूपी सांस्कृतिक धरोहरों का महत्त्व स्वतः स्पष्ट हो जाता है। ये बावड़ियाँ विशेष–कर किसी रानी तथा शासक के द्वारा बनवाई गई थी जो उसकी धार्मिक उदारता का प्रतीक है बावड़ी, कुँए, तालाब, मठ, छतरियाँ इन सभी के पीछे धार्मिक भावना निहित थी शेखावाटी क्षेत्र के शेखावत काल की ये बावड़ियाँ, कुँए स्थापत्य कला के नमून माने जाते है इनकी बनावट इस क्षेत्र में करीब–करीब एक ही प्रकार की होती थी।

1. प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से शेखावाटी क्षेत्र में विकसित बावड़ियों के स्थापत्य के विकास की जानकारी प्राप्त करना तथा इन बावड़ियों का सांस्कृतिक इतिहास के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना।
2. बावड़ियों के निर्माण सम्बन्धी धार्मिक सांस्कृतिक मान्यताओं, वर्तमान समय में वैश्विक जल संकट की विकट स्थिति को ध्यान में रखते हुए जल संरक्षण हेतु आवश्यक प्रयास व स्थानीय और प्रशासन के साथ–साथ इन ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण में जनभागिता सुनिश्चित करना।

कुटशब्दः शेखावाटी, बावड़ी, स्थापत्य, जल संरक्षण, सांस्कृतिक धरोहर, धार्मिक मान्यताएँ

प्रस्तावना
शेखावाटी क्षेत्र में शेखावत काल में अपने ठिकानों में अनेक वंशों के योग्य पराक्रमी और दूरदर्शी शासकों ने परम्परागत जल संचय के स्त्रोतों (बावड़ी, तालाब) के निर्माण परम्परा में अतुलनीय व महत्त्वपूर्ण योगदान दिया यहाँ के शासकों ने विशिष्ट अवसरों के समय जैसे युद्ध में विजयी होने, पुत्री के विवाह, पुत्र के जन्म होने तथा अपने वंश की कीर्ति पताकाओं को अमर व अक्षुण्ण बनाने और परोपकार हेतु तथा अपने क्षेत्र में आने वाले काफिलों के लिए पानी की व्यवस्था करना इन जल संचय के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहरों के रूप में बावड़ियों का निर्माण करवाया इस क्षेत्र हमें कुछ लघु शिलालेख भी प्राप्त होते है जो कि इन बावड़ियों के इतिहास निर्माण की प्रामाणिक जानकारी प्रदान करते है। बावड़ियों का यहां के लोक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है एक ओर ये बावड़िया लोक कला और स्थापत्य का अद्भुत नमूना है तो दूसरी ओर जल संरक्षण का ठोस आधार है। यहाँ की बावड़ियों का निर्माण राजा महाराजा और सेठ–साहुकारों ने बहुतायत में करवाया है मगर बहुत सी बावड़ियाँ ऐसी भी हैं जो लोकसंतों द्वारा निर्मित की गई है या फिर लोक के सामूहिक प्रयास का प्रतिफल है। इससे साफ होता है कि यहाँ की लोकसंत परम्परा भी जन जुड़ाव के कारण पानी की महत्ता को समझती थी।

राजस्थान में बावड़ी अथवा बाब से तात्पर्य एक विशेष प्रकार के जल स्थापत्य से है। जिसमें गहरा कुआँ अथवा एक बड़ा कुण्ड होता है इन पर अंलकृत द्वार, सुन्दर तोरण तथा देवी–देवताओं की प्रतिमाएँ बनाई जाती थी इसमें जल की सतह तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी होती थी जो कई सतहों तथा मंजिलों में बनी होती थी।

अपराजित पृच्छा के अध्याय 74 में बावड़ियों के चार प्रकार बताये गये है
1. नन्दा – इसमें एक प्रवेश द्वार और तीन कूट होते है। ऐसी बावड़ी मनोकामनाएँ पूर्ण करती है।
2. भद्रा – दो द्वारों और पट् कूटवाली सुन्दर बावड़ी भद्रा कहलाती है।

3. जया – तीन द्वारों और नौ कूट वाली बावड़ी जया कहलाती है। तथा ये देवताओं के लिए भी दुर्लभ होती है।
4. सर्वतोमुखी बावड़ी – चार द्वारों तथा बारह सूर्य कूट वाली बावड़ी सर्वतोमुखी होती है।

बावड़ी की खुदाई सीखे वाले महाराज द्वारा सुनिश्चित किये गये स्थान पर ही की जाती थी। प्रारम्भिक समय में इनकी बनावट साधारण होती थी ये पत्थर व चूने की चिनाई द्वारा इनका निर्माण होता था इन बावड़ियों की गहराई आवश्यकतानुसार होती थी धीरे–धीरे शिल्पियों द्वारा पत्थरों को तराशकर कलात्मक कारीगरी युक्त बावड़ियाँ बननी प्रारम्भ हुई। इन बावड़ियों के मुख्य तीन अंग होते थे– प्रथम कूप या वृत्ताकार लम्ब जहॉ से पानी रहट के माध्यम से खींचा जाता था द्वितीय सिढ़ियों पर बने छायादार स्तम्भ युक्त कमरे तथा तृतीय चारों ओर सोनानयुक्त कुण्ड जिसमें पीने का जल या स्नानादि के लिए जल संग्रह किया जाता था।

शेखावाटी क्षेत्र में बावड़ियाँ अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है भूगर्भीय जल स्त्रोत अत्यधिक गहराई में होने के कारण ये बावड़ियाँ अत्यधिक गहरी तथा विशाल होती थी इन बावड़ियों का निर्माण इस प्रकार किया जाता था कि आस–पास का वर्षा का जल इसमें गिरता था जिससे इस जल से लम्बे समय तक जल आपूर्ति होती रहती थी बावड़ियाँ धार्मिक भावना तथा जल कल्याण के उद्देश्य से बनाई गई थी।

शेखावाटी क्षेत्र की प्रमुख बावड़ियाँ

(1) चेतनदास की बावड़ी (गोल्याणा–नवलगढ़)

यह बावड़ी झुन्झुनू जिले की नवलगढ़ तहसील के गोल्याणा ग्राम जो लोहार्गल की अरावली पर्वत श्रृंखलाओं के पास स्थित है यहाँ की बावड़ी भी स्थापत्य कला की दृष्टि से देश में प्रसिद्ध है, क्योंकि यहाँ का जल बहुत गहराई में मिलता है। लोहार्गल (नवलगढ़) में चेतनदास की बावड़ी सातमंजिला है जिसके तल में कुआ भी है। इस बावड़ी का निर्माण लखनऊ के नवाब से आर्थिक सहयोग प्राप्त कर इसका निर्माण संत चेतनदास ने करवाया था जिसमें 108 सीढ़ियाँ है तथा हर मंजिल पर साधु संन्यासियों के लिए आवास की व्यवस्था की गई है इसी तीर्थ स्थल पर ज्ञान वापी बावड़ी भी जो ऊपर से खुली हुई है। शेखावाटी में चेतनदास की बावड़ी और परशुरामपुरा की छतरी के लिए कहा जाता है –

चेतनदास की बावड़ी, बीलवा का बड़।
परशुरामपुरा की छत्तरी, तीनों की एक ही जड़।।

अर्थात् चेतनदास की बावड़ी यहाँ की सभी बावड़ियों में विशाल हैं तो परशुरामपुरा ग्राम की छतरी चित्रांकन की दृष्टि से आज भी प्रसिद्ध है बीलवा ग्राम का बड़ (वट वृक्ष) विस्तार में किसी समय आश्चर्य का प्रतीक था फतेहपुर व मुगलकालीन बावड़ियाँ रख–रखाव के अभाव के कारण अपना स्वरूप खो चुकी है।

(2) झुन्झुनू की भूत बावड़ी

इस बावड़ी का निर्माण शेखावत काल में हुआ था शार्दूलसिंह की रानी मेड़तनी ने 1742 ई. में इसका निर्माण करवाया। इस बावड़ी में नीचे तक जाने के लिए 159 सीढ़ियाँ है। यह बावड़ी बहुत गहरी है नीचे गहराई में जाने पर भय लगता है इस कारण इस बावड़ी का नाम भूत बावड़ी पड़ गया। इस प्रकार झुन्झुनू की यह भूत बावड़ी स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

(3) फतेहपुर की बावड़ी

एक शिलालेख 15 वीं शताब्दी का मिला है जिसके अनुसार शेखावत काल से पहले की दूसरी महत्त्वपूर्ण बावड़ी है यह झुन्झुनू की भूत बावड़ी से भी बड़ी है। इसमें दूर–दूर तक बारहदरी (कोठरियां) बनी हुई है। यह भूत–बावड़ी से अधिक गहरी तथा लम्बी है इसकी बनावट भी करीब–करीब वैसी है। फतेहपुर में बाडी गेट का नाम इसी के कारण पड़ा है इस बावड़ी का निर्माण फतेहपुर के नवाब अलफ खां ने करवाया था।

(4) नवलगढ़ की बावड़ी

इस बावड़ी का निर्माण ठाकुर नवलसिंह द्वारा 18 वीं शताब्दी में करवाया था। यह बावड़ी छोटी है तथा इसकी लम्बाई भी कम है। यह ज्यादा गहरी भी नहीं है नवलगढ़ का पश्चिमी द्वार बावड़ी दरवाजे के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा अन्य छोटी–छोटी बावड़ियाँ अन्य स्थानों पर भी बनी हुई है। जिनका समय पर संरक्षण नहीं होने से मिट्टी से भर गई और उनके अब अवशेष मात्र रहे गये है।

(5) कालीबॉय बावड़ी (खण्डेला)

यह बावड़ी खण्डेला कस्बे के दक्षिण में खण्डेला मार्ग पर जीर्ण शीर्ण अवस्था में यह बावड़ी अवस्थित है। यह बावड़ी खडेला से पलसाना मार्ग के मध्य में स्थित है। इस बावड़ी के निर्माण में 17 वर्ष लगे थे यह बावड़ी खण्डेला के शासक नाथूदेव निर्वाण के शासनकाल में बनाई गई थी इस बावड़ी के शिलालेख के पाठ का आशय है कि संवत् 1575 फागुण सुदी (शुक्ल) 13 को अग्रवाल गोत्र के कोल्हा के पुत्र पृथ्वीराज तथा उसके पुत्र रामा और बाल्हा ने इस बावड़ी का निर्माण शुरू किया तब खण्डेला का शासक नाथूदेव था और दिल्ली में सुल्तान इब्राहिम लोदी का राज्य था यह निर्माण कार्य विक्रम संवत् 1592 को जेठ सुदी में पूरा हुआ तब दिल्ली पर हूँमायूं का शासन था इस लेख के एक कोण पर 20 का मंत्र खुदा हुआ है। अब यह शिलालेख कालीबाँय से हटा दिया गया। पं. झाबर मल शर्मा ने इस शिलालेख को बावड़ी पर न देखकर अजमेर म्यूजियम में देखा था। इस शहर में तथा आसपास के गाँवों में बावड़ियों की अधिकता के कारण इसे 52 बावड़ियों वाला खण्डेला या बावड़ियों का शहर भी कहा जाता है।

(6) मूनशाह की बावड़ी (उदयपुरवाटी)

यह बावड़ी झुन्झुन जिले के उदयपुरवाटी तहसील में स्थित है। इस ऐतिहासिक बावड़ी का निर्माण उदयपुरवाटी के राजा टोडरमल के मंत्री मूनशाह द्वारा किया गया था जिसमे पत्थरों द्वारा कलात्मक सीढियों बनाई गई वर्तमान में यह बावड़ी संरक्षण के अभाव के कारण जर्जर अवस्था में है।

निष्कर्ष

मानव ने अपने जीवन के साथ–साथ जल का महत्त्व और उसकी मानव जीवन में आवश्यकता को समझा। यही कारण रहा कि उसने अपने रहने का ठिकाना वही बनाया जहाँ जल की उपलब्धता थी और इस संकट से मुक्ति पाने के लिए बावड़ियों और तालाबों का निर्माण करवाया। साथ ही उन्हें साफ करने का संदेश भी दिया जल संरक्षण के पीछे लोगों की आवश्यकता तो जुड़ी हुई थी ही, साथ ही यह धारणा भी प्रचलित थी कि भूमि का जल खत्म होने पर उनकी भविष्य की पीढ़िया क्या करेगी? इसी कारण भू–जल का दोहन कम किया जाता और सतही जल की उपलब्धता को अधिक महत्त्व दिया जाता था। इसमें वर्षा के जल के अतिरिक्त भूमिगत जल का स्त्रोत भी होता है अनेक राजाओं एवं सेठों ने राज्य के विभिन्न भागों में इनका निर्माण कराया है जो कलात्मक भी है शेखावाटी की बावड़िया तथा बूँदी की बावड़ियाँ अपनी स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान में रख–रखाव के अभाव में इन बावड़ियों की दुर्दशा हो रही है जल संरक्षण हेतु पुरानी बावड़ियों का सुधार कर उनका उपयोग किया जाना आवश्यक है।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मेहता, अमित, प्रथम संस्करण 2022 : शेखावाटी का इतिहास और स्थापत्य यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर पृ. 75, 76, 78
2. आर्य, एच.एस. द्वितीय संस्करण, 2013 : शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर पृ. 211, 212
3. सक्सेना, हरिमोहन, राजस्थान का भूगोल, पृ. 107, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2022।
4. खण्डेला (सीकर) स्थित भाजी की बावडी का शिलालेख संवत् 1749 (1692 ई.)
5. गोल्याणा (झुन्झुनू) की बावड़ी का शिलालेख संवत् 1774 (1717 ई.)
6. मिश्र, रतनलालः खण्डेला के सांस्कृतिक वैभव की भूमिका साभार तिवाड़ी रघुनाथ प्रसाद उमङः खण्डेला क्षेत्र का सांस्कृतिक वैभव प्रकाशकः ऋचा प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2011–पृ.–1
7. डॉ. जुगनू, कृष्ण एवं प्रो. शर्मा, भंवर ; अपराजित पृच्छा (भुवनदेवाचार्य) दिल्ली, वर्ष – 2011 भाग–1, सूत्र 75 श्लोक–35 पृ. 432
8. शर्मा, झाबरमल एवं शर्मा, श्यामसुन्दर पण्डित : खाटू के श्याम बाबा का इतिहास, पृ. 139 एवं शेखावत, सुरजन सिंह–शेखावाटी के शिलालेख एक अध्ययन, पृ. 62
9. मील, संदीप कुमारः (शेखावाटी की लोक संस्कृति) प्रकाशन विभाग (सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार प्रथम संस्करण 2018 पृ. 42, 43
10. गरवा, रामकुमार, प्रथम संस्करण, 2011 राजस्थानी साहित्य संस्कृति में शेखावाटी का योगदान, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पृ. 204, 205।